# बिखरे हुए फूल

पण्डित बुद्धदेव विद्यालङ्कार

साहित्य परिषत् ग्रन्थमाला का ५ वां ग्रन्थ

# बिखरे हुए फूल

रचयिता

परिडत बुद्धदेव विद्यालङ्कार

प्रकाशक—

साहित्य परिषत् गुरुकुल काङ्गड़ी

वैशाख १९७९

प्रथमावृत्ति १०००

[दाम ≈।]
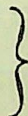
प्रकाशक

मंत्री —यशःपाल

साहित्य परिषत्

गुरुकुल-काङ्गड़ी
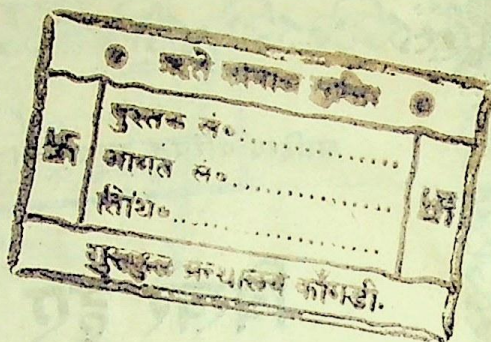
मुद्रक

श्री सूर्यनारायण जी

जगन्नाथ प्रिंटिङ्ग वर्क्स, राजघाट, काशी ।

ओ३म्

# निवेदन

वर्तमान समय में हिन्दी साहित्य में गद्य रचना जितनी प्रौढ़ और उन्नत हुई है उतनी पद्य रचना नहीं। हिन्दी में जब से खड़ी बोली में कविता होने लगी है तभी से कई विचारकों का यह मत है कि इसमें वह प्रसाद, माधुर्य और बाँकापन नहीं है जो व्रजभाषा में है। हमारा यह विश्वास है कि वह दिन अब दूर नहीं है जब कि रसिकगण इसी सरल देवनागरी में वह रसास्वाद करेंगे, उस भावुकता का अनुभव करेंगे जिस से उनका हृदय आप्लावित होजायगा, झूम जायगा, फड़क उठेगा, तन्मय होजायगा और तब उन्हें अपनी इस सम्मति को बदलना ही पड़ेगा।

कविता का रंग किस भाषा में नहीं चढ़ सकता ? ज़रा सा गहरा रंग चढ़ाने वाले की आवश्यकता है, अनुभव करने वाले मस्त दिल की ज़रूरत है फिर देखिये कि किस भाषा में भीनी भीनी सुगन्धसे भरे सुन्दर फूल नहीं खिलते। इस विश्व मन्दिर में कमलासन पर विराजमान सरस्वती जिस भाषा में मधुर गायन करती है-वह क्या कोई एक ही भाषा है ? क्या इस वाग्दे-

वंता का मधुर स्मित एक ही रूप में प्रकट होता है? कभी नहीं इस अनन्त वसिनी विश्व मूर्ति की अनन्त भाषायें हैं, अनन्तरूप हैं। वह तो उन शब्दों में भी प्रकट होती है जिनको कोई विरला उपासक भक्त ही समझ सकता है और जो एक साधारण पुरुष को अनमेल कोलाहल ही प्रतीत होता है।

गुरुकुलीय साहित्यपरिषत् को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि वह एक ऐसे ही नये प्रतिभाशाली कवि की पुस्तक को हिन्दी संसार के सन्मुख उपस्थित करने लगी है। इसमें क्या विशेषतायें हैं? इसकी परख तो उदार समालोचक ही करेंगे। हम यहां इतना अवश्य निवेदन कर देना चाहते हैं कि कवि महोदय गुरुकुल काङ्गड़ी के एक योग्य स्नातक हैं। अतएव उनकी कविता में कुलभूमि की विशेषतायें आजानी स्वाभाविक हैं। बहुत सी कवितायें तो उनकी विद्यार्थी जीवन की ही बनाई हुई हैं आशा है कि कविता प्रेमी रसिकगण इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए पुस्तक की उचित समीक्षा करेंगे।

अन्त में हम श्रीयुत पण्डित जयदेव जी शर्मा विलङ्कार को हार्दिक धन्यवाद देते हैं जिन्होंने इस पुस्तक के प्रकाशन में हमें उचित सहायता प्रदान कर अनुग्रहीत किया है।

गुरदासपुर
अमावस १५ माघ
१९७८

वंशीधर
मंत्री
साहित्य परिषत्
गु० कु० काँगड़ी

विषय सूची

बिखरे हुए फूल

# मंगलाचरण

*सबके चित आनन्द बसे जी ॥ टेक ॥*

दूर होंय दुख दारिद सारे, सुख सम्पति अधिकार करै जी ॥
या विधि होय सदा सतसङ्गति, गुणिजन को परिवार बढ़ै जी ॥
निशि दिन हमपर नाथ तुम्हारा, अतुल नेहमय हाथ रहै जी ॥
भक्ति मगन हो मङ्गल गावें, तव चरणन अनुराग बढ़ै जी ॥
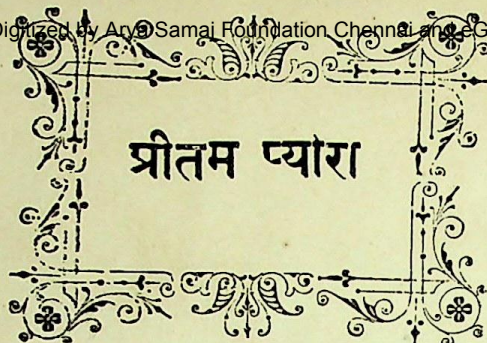
सपनेहु सीस कभी न झुकाया,
अब होगा कैसे निस्तारा ॥
पकड़ हाथ अब पार लगावो,
भक्तन के तुम प्राण अधारा ॥
नहीं अपने तन मन की चिन्ता,
व्रत कैसे निभि है जो धारा ॥
या विधि सोच पड़े जब सब थे,
तब प्रभु बरसी अमृत धारा ॥
पल में तम सब दूर हटाया,
चहुं दिशि जगमग नवल उजारा ॥
मैं मतिमन्द जो इकला जाना,
तुम अनन्त अब हाथ पसारा ॥
हो निशंक अब काज संभारो,
आज मिला फिर "प्रीतम प्यारा" ॥

# वीणा

मिलादे मुझको भी रागमे ऐ ! निराली वीणा बजाने वाले ।।टेक।।
चढ़े न ऐंठन में तार कोई, न ढील का हो विकार कोई ।
इधर उधर की भी उलझनों से छुड़ादे, तारें चढ़ाने वाले ।। १ ।।
न काठ को घुन सताये कोई, नमी न भारी बनाये कोई ।
बसाके नस नस में प्रेम रङ्गत, ऐ नाथ फिर गोद में बिठाले ।। २ ।।
कठोर को सुर थमाये कोमल, पड़े जो धीमे उन्हें जगा दे ।
ये उल्टी गूंजों का भेद मुझको, दिखा दे ढकना उठाने वाले ।। ३ ।।
मैं सैकड़ों राग गा गया हूं, हजारों गानें उड़ा गया हूँ ।
हटा के इनको वो गूंज अपनी गुंजा दे पलभर गुंजाने वाले ।। ४ ।।
ये चन्द्र तारादि साज साजे, अनादि निस्सीम नाद बाजे ।
बिछुड़ गया हूँ, तड़प रहा हूँ, तड़प चुके हैं तड़पने वाले ।। ५ ।।
है वीणा तेरी, है तार तेरी, है राग तेरा, है ताल तेरी ।
बजी तो तेरी, रुकी तो तेरी, बचा ले अब लाज रखने वाले ।। ६ ।।

# कब वह नाथ छिड़ैगी तान

त्रिभुवन मोहिनि मोरि वीणा के निकल गये हैं प्रान ।
तार मिला दो नाच उठेगी फिर बरसेंगे गान ॥१॥
युग बीते हैं बजत बेसुरी सुनो रसों की खान।
क्यों न उलहना तुम्हें नाथ दूं, तुम नहिं देते कान ॥२॥
युग पीछे आ इक रागी[2] ने, ऐंठी खूंटी आन ।
पकड़ हाथ तुम उसे खींच गए, अधवर रह गई जान॥३॥
भली करी प्रभु फिर कहते हो तुम हो दया निधान ।
बुरी करूँगा मुझे बचाकर रख लो अपनी शान ॥ ४ ॥
एक बूंद उस मधुर गान की, जिन कानन की पान ।
आंख मूंद वह तड़प रहे हैं तुम्हें आसरा मान ॥ ५ ॥

१ भारतमाता, २ ऋषि दयानन्द ।
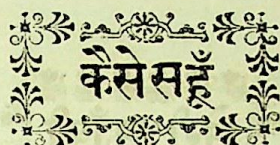
कैसे सहूँ ऐ जग के माली ॥ टेक ॥

नहीं कहीं अब पौन बसन्ती, झूमि झूमि चलती मतवाली
छीन लई मोरि नवल सजीली. निठुर काल चादर हरियाली ॥
डार डह डही भार मैं जानी, अति दूभर पर है यह खाली ।
कुसुम कपोलनने तजि दीन्हों, ललित विलोचन लोभन लाली ॥
आप भई सो सब सह डालूँ, सहि न जात पर रसिक बिहाली ।
द्वार खड़ी को कैसे मोड़ूँ, मधु याचत भोली मधु पाली ॥
छांह बिना मुख मोड़ रही है, श्रम निगड़ित पग यह पथिकाली ।
जिन गलहार बनावन चाही, तिन गल पाश भई मोकि डाली ।
राख मोरि बनि खाद करेगी, बन माली ! सखि तब रखवाली ।
सह वासी तरुवर सुख साजौ, गई बसन्त अब हमहुँ बिदाली ॥

# तेरी झाँकी

*तड़पा रहा है क्यों तू झाँकी दिखा दिखा कर । टेक ।*

बंध बाहु पाश में जा, ओझल या प्यारे होजा ।
भटका रहा है क्यों तू, उंगली छुआ छुआ कर ॥ १ ॥
बेरोक छोड़ ताने, पीने दे राग अपना ।
क्यों गुन गुना रहा है पत्तों की ओट आकर ॥ २ ॥
कुछ कद्र कम न होगी, जो पास मेरे होगा ।
इज्ज़त न कुछ मिलेगी मुझको सता सता कर ॥ ३ ॥
झांकी भी देखनी अब मुश्किल हुई है तेरी ।
पर्दा बना रहे हैं आँसू झड़ी जमाकर ॥ ४ ॥
इतनी लगन है जिसको तेरे बिना ही देखे ।
दीवाना उसको करदे इक बार जगमगा कर ॥ ५ ॥

# खेंचातानी

*नाथ भली भइ खेंचा तानी । टेक ।*

राग रङ्ग में झूमे टोली मो पै क्या बीती किन जानी ॥ टेक ॥

[ १ ]
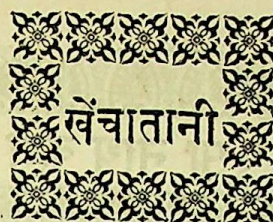
कभी तो बेबस ढीली छोड़ी,
कभी कस कस के खूंटी मरोड़ी।
लगी टनकने पापिन जोड़ी,
होने लगी मोरी झीना झीनी ॥ नाथ भली भई ०

[ २ ]

इक उङ्गली सुन्दरी पै दबाओ,
फिर दूजी सों मार बताओ ।
मैं कलपूं तुम लोक रिझाओ,
आग लगे ऐसी प्रेम कहानी ॥ नाथ भली भई ०

[ ३ ]

इतने हू पर दर्द न आई,
खींच के लम्बी मींड़ लगाई ।
लगी झरने चहुँ ओर बड़ाई,
इत पसली सब होगई पानी ॥ नाथ भली भई ०

[ ४ ]

तान की बिजली जगमग जागीं,
उत गमकैं बढ़ थिरकन लागीं ।
अब धीरज की घड़ियाँ भागीं,
ऐसी कड़ी काहे प्रभु ठानी ॥ नाथ भली भई ०

# ऐसा नाथ करो
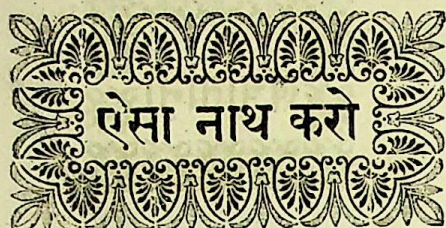
*किस विध प्रभु करिये गुनगाना । टेक ।*

तब महिमा का पार न पाया, गाने को पर चित्त लुभाना ॥
सुर मनुजासुर बन्दित जननी प्रेम मयी सब गुण गण खाना ॥
मौलिमुकुट हिमगिरि राजत है, हार हिये गङ्गा लहराना ॥
चरण चूम मानी सागर ने धन्य धन्य अपने को माना ॥
शैशव ललित मुग्ध मानव ने, तेरे मधुमय अङ्क बिताना ॥
स्तन्य वेदमय पावन मीठा, मम जननी सब जगत पिलाना ॥
वाल्मीकि· तुलसी अरु सूरज, कालिदास सुत कलानिधाना ॥
विविध रूप धरि सरस्वती ने; जिसको है सादर सन्माना ॥
लंका द्वारवती रण अङ्गण, जिसके सुत भूभार मिटाना ॥
तीस कोटि मेरे भाई हैं, मै मतिहीन जो इकला जाना ॥
ऐसे सुख मुझपर बरसाये, मैं पर अब लग नहिं पहिचाना ॥
द्वेष· लोभ, मद मत्सर डूबा, प्यारे को मैं रहा भुलाना ॥
चार लुब्धय गज साँकल बाँधो, अधम नहीं प्रभु मोहि समाना
ऐसो नाथ करो अब तो कुछ, यह निर्भर फिर बहै सुखाना ॥

# प्रातः उपासना
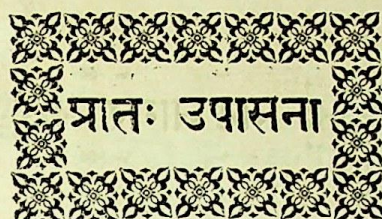
*किस मुख से विनती करिये । टेक ।*

नैन जड़ित रसना रस डूबी, सुखमा सरि किस विध तरिये ।।
झुकि झुकि डार बन्दना लागीं, कहै पञ्छी आलस परि हरिये ।
बहत बयार मृदुल रस भीनी, अब तो सजन भजन चित धरिये ।।
स्फुर मुट चीर किरण दिनपति को, लगी कहन इतहू दृग भरिये ।
ओस बिन्दु पचरङ्गी लरियाँ मोतिन की इत हू तो उतरिये ।।
देखि कृपा उमड़ी सुधि भूली यह दुबिधा प्रभु आप हि धरिये ।
सोस पड़ी मोकों, मैं पापी, कैसे कहूं पर और न झरिये ।।
इक विनती करुणानिधि मोरी, पर पूरो करिबे सो न टरिये ।
हों झाड़ी दो चार कटीली, उलटी दृग जासों न पकरिये ।।

# नट नागर

*नट नागर ! रचना दिखला दे । टेक ।*

बहुत हुई अब जाग गया हूं तू आन्धी कितनी ही चला दे ॥
धूल उड़ादे, बन्ध छुड़ादे, इस लोरी सुख नींद सुलादे
उठी तरंगे शैल विशालों, इनको चाहें और उठा दे ॥
गोद पड़ा हूं आकर तेरी, अब तो इसमें मुझे झुलादे ॥
समझ गया हूं अब न टलूंगा, घटा टोप घनघोर हटा दे ॥
श्याम घटा में भेद छिपा जो, उसकी उजली झलक दिखादे ॥
दास दास के हित के कारण, भय रचना कितनी ही बनादे ।
भींच ओंठ प्रभु बहुत डराया, बस, बस, बस, अब तो मुसकादे ।

बहुतदिनों बदली ने घेरा । टेक ।

लगी काटने खटिया अब तो, हर लो नाथ! अंधेरा ।
हुआ कौन अपराध नाथ, जो विपति उदधि में घेरा ॥
उमड़ि घुमड़ि घन गरजैं पानी रिम झिम झरै घनेरा ।
नाथ चलेंगी नहिं यह चालें फागुन सावन केरा ॥
अब तो फिर वह वायु बसन्ती हरियावल चहुं फेरा ।
ज्योति सुनहली तरु सब न्हावैं क्या रसाल क्या केरा ॥

# बहुत हुई अब आंख मिचौनी

*बहुत हुई अब आंख मिचौनी । टेक ।*

जगमग झंपक फेर अँधियारा, बहुत हुई यह छुआ छुऔनौ ।
जल झुकियां बेलरिया पल में, होन लगो निष्ठुर झटकौनी ॥
कुचल रहे कलियां यह भोली, नांहि लगो तुम्हें काहि लजौनी ।
नैनन मूंद उघारी अबके किन आगे झाँकी दिखलौनी ॥
बीच पड़ी यह भीत न जब लों, चूर होय दिलकी झुलसौनी ।
काहे को ढङ्ग ये काहे को चलें, काहे को ज्वाल निठुर तरसौनी ।
सिर धर बाँह तुम्हारी हि होगी, आखिर तो झरियाँ बरसौनी ।
ना सुर ताल न रागिन जानूं, आह ! रहो पल पल कलपौनी ।
इसका मरम न जो तुम जानो तुम्हरो ही होगो तो हंसौनी
काहे को ठूंस दई मुंह मेरे वह भभूत जोगों को लुभौनी ।
आग लगो अब द्वार न छोड़ों करो सुरत फिरनी हो डरौनी ॥

# विनय-अञ्जलि

विनती यह है! नाथ ! हमारी, अंधियारी मिट जावे सारी ।
स्नेह मयी अतिशय उजियारी, राह दिखावे ज्योति तुम्हारी।
एक मंत्र में दीक्षित होवें, भेद सभी अब देहि बिसारी ।।
बने गुणीजन पद अनुगामी, कर पकरैं जिन लखैं दुखारी ।
सत्सङ्गति हो, सच्ची मति हो, कर्म्म होंय सब जन उपकारी।।
सरस्वती की नवजीवन से, खिली रहे यह नव फुलवारी ।
तेज दण्ड में अजय हमारे, सदा रहे कल्मल संहारी ।
सफल काम हों तव करुणा से, ब्रह्मचर्य का व्रत अतिभारी।।
तन, मन, धन, सुख, सब विसरें, जन्मभूमि सुख सजे हमारी
दुख हो, सुख हो, तुझे न भूलें, तू वत्सल भक्तन भयहारी ।।

# प्यासा पपीहा

मोरी कौन बुझावे प्यास । टेक ।
बरस झरियां सावन की फूलन आये कास ।
स्वाति की बूंद बिना पपिहा के गल लौं आये साँस ।।
प्यास लगी मैं धूनि रमाई जगत करत उपहास ।
तुम सों प्रभु पुनि कैसे कहिये, तुम स्वामी मैं दास ।।

# तेरा बन्दा
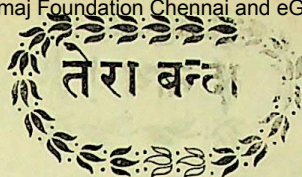
तू है अजब खिलाड़ी कैसे खिला[illegible] तूने ॥ टेक ॥

खाई जो चोट घन की मिठी ठनक ही निकली ।

ले धात ही सुरिली बन्दा बनाया तूने ॥ १ ॥

ज़ख्मों से छट पटा कर जो रो दिया ज़रा सा ।

यह राग बेसुरा है तब यों सुनाया तूने ॥ २ ॥

तलवार के तले हम जब जान दे रहे थे ।

'हँस कर दिखाओ' मालिक, तब यों सुनाया तूने ॥३॥

दुश्मन को आरती का जब वक्त मेरा आया ।

खू.ने जिगर का दीया हँस कर जलाया तूने ॥ ४

थे प्यास से झुलसते, था साम्हने सुधा-रस ।

पीने के वक्त एक दम परदा गिराया तूने ॥ ५ ॥

लकड़ी भी मैंने ढोई, मैंने चिता बनाई ।

"इसको जलाओ अपने हाथों" सुनाया तूने॥ ६ ॥

मंजूर था सभी कुछ इस जान पर जो बीते ।

औरों का छटपटाना पर क्यों दिखाया तूने॥ ७ ॥

नौरङ्ग तेरा बन्दा तू चाहे ज्यों नचाले ।

आखिर यही तो होगा बन्दा सताया तूने ॥ ८ ॥

# नाथ !

मैने छोड़ दई पतवार. ॥ टेक ॥

( १ )

अब लहरें कितनी ही उठाओ कितनीबढ़ै बयार।
अब न डरूं तुमने जा बिगाड़ा पहिले कर कर प्यार ॥

( २ )

जब लहरों ने छतरी तानी आन बीच मझधार ।
नैन मूंद मैं नाचन लाग्यो ठण्डो खाय फुहार ॥

( ३ )

शैल शिला की ओर चली है कर अठखेली चार।
फुलवारी के फूल गिनूं मैं कैसी डह डही डार ।

( ४ )

चूर चूर कर इसको करलो अपना वेड़ा पार ।
भर मुट्ठी मोती की मैं भी निकला डुबकी मार ॥

( ५ )

पहिले अपना हार बनाऊं शेष तुम्हें उपहार।
कर 'मराल' सों नाथ ठठोली फिर मानोगे हार ॥
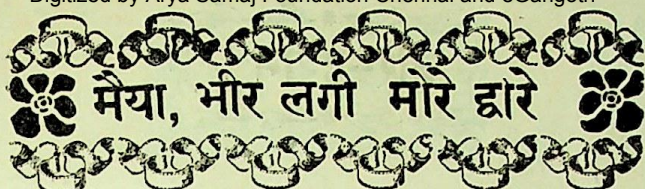
# मैया, भीर लगी मोरे द्वारे

*मैया भीर लगी मोरे द्वारे ॥ टेक ॥*

मानवती चूड़ामणि माया, अधर भींच, सिङ्गार संवारे ॥
मैं निर्भय आंचल लपटानो, स्नान करूं दुधिया पतनारे ॥
जो ँसिके बाहिर लों झाँकूँ, लपक उठें पाने चमकारे ।
झन झन झन झन गूँज उठत हैं, मनमोहन नूपुर झङ्कारे ॥
मैं प्रपञ्च सब छकि छकि छाने, चूसि चूसि सब [illegible] उतारे ।
इत मिठास, उत निरी खटाई, दूध छाँड़ि को खाय कटारे ॥

( इस पर झुलस कर माया रंग बदलती है )

लखि मुसकान अधर फिर मोरे झुलसावनि तिमि आग पजारे ॥
पलमें पलट जात हैं चितवन, शैल सीस मृदु पवन फुहारे ॥
शुभ्र वसन, मधुमय सब साजा, नैन नीर सब धूलि पखारे ॥
मैं मैया नटखट, जग भटको ना अटकूं शतजाल पसारे ॥
दृगहुं न दान करों तजि आँचल, जगदम्बे तोरेहु फटकारे ॥
आन शरण तोरी न निगोड़ी, जबलों अपना जनम सुधारे ॥

# हरि--दर्शन ।

ऐसो ना हरि दरस मिलैगो ॥ टेक ॥

(१)

न मूँद डुबकी जिन लाई,
तिन झाँकी प्रभु की लख पाई ।
तुम जग झांकी रहे भुलाई,
ऐसा ना प्रभु द्वार खुलैगो ॥

(२)

जिन सरबस की गांठ लुटाई,
तिन प्रभु पीत की गाँठ लगाइ ।
भोग की रस्सी तुम उलझाई ॥
ऐसो ना यह फाँस कटैगो ॥

(३)

बन मेंहदी के पात पिसाये ।
सोइ परमारथी रङ्गत लाये ।
तुम अपनी ही डाल सुखाये ।
ऐसो ना यह रङ्ग खिलैगो ॥

## हँसो हँसाओ

(१)

हंसो हंसाओ खिलो खिलाओ
न एक बादल हो आसमाँ में।
ये मस्त लोगों की तान एक दिन
ज़ुबाँ पै सब के सवार होगी ॥

(२)

बुरे दिलों में कहेंगे हंसकर
बुरी घड़ी आज टल रही है।
भले हों दिन फिर तो कोने कोने
हँसी की बहती बयार होगी ॥

(३)

बसी न मस्ती अगर हो दल में
तो मोड़ लीजे कदम इधर को।
जो मिल के बैठेंगे चार अपने
न क्यों खुशी की बहार होगी ॥

(४)

मैं देख फूलों को हंस रहा हूं
वे देख काटों को रो रहे हैं।
भला जो हंसने से समझें रोना
तो उनकी किन में शुमार होगी ॥

# दीवाने का आलाप

*पागल जो बनना चाहो तो हम से आन सीखो ॥ टेक ॥*

दुनिया के सब गुणी जन हमने दिये भुलाई,
निर्गुण से लौ लगाई, कोई हमसे आन सीखो ॥
सब छोड़ रूप जगके चित को लुभानेहारे,
नीरूप में रमे हैं, कोई हमसे आन सीखो ॥
सुनना है नाद मीठा लखना है रूप सुन्दर
हैं नैन कान मूंदे, कोई हमसे आन सीखो ॥
अपना रहा न कोई अपने हुए सभी हैं
हम होचुके सभा के, कोई हमसे आन सीखो ॥
तज सभ्यता की जगमग जगमग कहानी सारी,
जङ्गल में मर रहे हैं, कोई हमसे आन सीखो ॥
छोड़े हैं देश सारे, धन धान्य मानशाली,
भारत पै मर रहे हैं, कोई हमसे आन सीखो ॥
अवहेलना भरी इक महलों पै आंख डाली,
मरघट कुटी बनाई, कोई हमसे आन सीखो ॥
तेरे विभव की मातः ! ली राख मल बदन में,
छोड़ा लगाना चन्दन कोई हमसे आन सीखो ॥
भूले हैं गङ्गा जमुना, भूले हैं तीर्थ सारे
आंसू में न्हा रहे हैं कोई हमसे आन सीखो ॥
सोने का थाल छोड़ा, घी के चिराग़ छोड़े
जलते दिलों की थाली लाये हैं आन सीखो ॥
बस एक अब विनय है पागल बनाने वाले
पल भर नशा न उतरे यह मन्त्र रटना सीखो ॥
पागल जो बनना चाहो तो हमसे आन सीखो

# विनय

चहुंदिस ते घनघोर घटाने आकर घेरा ॥ टेक ॥

(१)

चहुं दिस ते घनघोर घटाने आकर घेरा।
गोलीमार थपेड़ वायु ने मुखड़ा फेरा ॥
दामिनि कड़की, साथ लगा दिल दीन धड़कने।
धारा भीषण रूप, काल वश आज चमकने ॥

(२)

इत उत मिले न थाह सभी जल रूप हुआ है।
सांस रहे दो चार अन्त अब दूर नहीं है ॥
जीवन बीता भक्ति कथा की हँसी हसी में।
'नाथ ! शरण हूं' उदित हुआ यह कैसे जी में ॥

(३)

शार्दूल विक्रीड़ित

भीतर बाहर मेघ डम्बर हटा, आनन्दमें डूब लें,
प्यारा रङ्ग त्रिछाय चारु किरणें हंसकर लगी झांकने।
"पाया आज जिसे, उसे न तजना" यों देववाणी हुई,
वीणा की झनकार मीठि मुरली सुरमें सखे ! मिल गई ॥

*बन्द करदे मोक्षवादी राग अपना बेसुरा, । टेक ।*

भरगये हैं  कान मेरे बेड़ियों की गूंज से,
कैसे सुनूँ मैं राग  तेरा और वह भी बेसुरा ।।
कानून के साँचे में है तेरी जबाँ और लेखनी ।
दिल को भी जकड़ा है बदी ने, राग तेरा बेसुरा ।।
धावा खुदाई पर है बोला, उल्झनों अपनी फंसे ।
कहनी ढिठाई भी लजाकर, राग तेरा बेसुरा ।।
मरहम लगाने को न उंगली, दिल बंधाने को न जीभ ।
कैद है, वह क़ैद है, है राग तेरा बेसुरा ॥
दर्द से फ़ुरसत जिन्हें उनको सुनाया कीजिये,
रोती हुई दुनिया पै हँसना है सरासर बेसुरा ॥
हंसना हो तो खूब हंसिये, पर सबके हंसाने के लिये,
वर्ना रोती मण्डली में हंसना बिलकुल बेसुरा ॥
उड़गये हैं ताल सुर, दुनिया हुई बेमेल है,
तुनतुनीका तेरी इसमें सुर मिलाना बेसुरा ॥
काट औरों की, तो अपनी आपही कट जायगी,
अपनी साँकल खनखनाना जान  बिलकुल बेसुरा ।
तुझको अपना हो मुबारिक छूटना यह मिश्र जी,
सब के संग बंधना नहीं हमको तो जंचता बेसुरा ॥

# मैं कौन हूँ
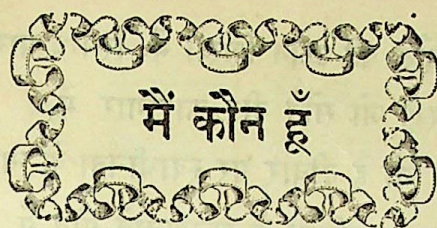
स्वाधीनता मञ्जुल विपञ्ची की मनोरम राग हूं,
रसिक सच्चों का सदा संगी सुमीत सहाय हूं ।।टेक ।।

झूमते आनन्द तरु का सहज सुरभित फूल हूं,
जाति के उठते हृदय का रुधिर जीवन मूल हू ।
मैं युवाओं का सखा, उत्साह का अवलम्ब हूं,
प्रासाद के उनका सजीला स्वर्ग रञ्जित स्तम्भ हूं ॥
आशा मधुर सङ्गीत उनके कान में गाती हूं मैं,
अपनी झलक नैराश्य में भी उनके भर देती हूं मैं ।।
मुस्कराती है निराशा भी मेरे सम्पर्क से,
दिल जहां पर तोड़ता था देखते हैं तर्क से ॥
उद्दीप्त मादन और बोधन गीतको गाती हूं मैं,
कर्म वह स्पृहणीय ऊर्जित उनके करवाती हूं मैं ॥
जिनके कारण ही दिलों में आज भी करते हैं राज,
पृष्ठकाले भी उजाले दीखते हैं जिनसे आज ।।
धर्म की चट्टान पर मेरा मधुर उल्लास है,
पय से पयको जानले, मेरा वह सच्चा दास है ।।
रहती हूं रसना में मैं उनके जो पराये हो चुके,
भयसे नहीं, बस, प्रेम से जो सब किसी के हो चुके ।।
रहती हूं सच्चे सूर की तलवार की मैं धार में,

हिम शैल की उन्नत शिखा में, स्निग्ध पारावार में ।।
सत्य के कारण जो सोते वीर कारागार में,
हंसते जो हैं दीवार पर स्वाधीनता के प्यार में ।।
उनकी सखे! पग बेड़ियों के खनखनाते गीत में,
सारङ्ग में, नासीर में, मरतोंकी प्यारी जान में ।।
अपनि ज्वाला से जले अनुतापियों के दाहमें,
चोट मन्दर से मथित घायल दिलोंकी आहमें ।।
डूबते रविके अनोखे रुचिर रङ्गागार में,
जागते सरमें, मिलिन्दों की मधुर झङ्कार में ।।
पञ्छियों के मञ्जु रव में, फूलके मुस्कान में,
भावना में भक्त जनकी, मधुर मङ्गल तान में ।।
स्तनपायि मुखड़ों पर जहां वहती नयन से दुग्धधार,
तर्कसागर भी नहीं जिसका कहीं पावेंगे पार ।।
मुग्ध, दुःखविमुक्त , उस माता की मीठी गोद में ,
उन आंसुओं, उन आँखों, में, विस्रम्भ में, आमोद में।।
नहि दुःख केवल किन्तु सब आनन्द भी जाते हैं भूल,
धूलमें भी लोटते जिसगोद कहलाते हैं फूल ।।

# चरखे की मार

( १ )

## वाशिङ्गटन

नव यौवन बहुमानगर्विता वाशिंटन नगरीके बीच
निश्चल अगणित पथिक झुके जंह दांतों से ओठों को भींच।
उन्नत मस्तक किये वहां पर एक खड़ी है मूर्ति विशाल,
उठी हुई है उंगली उसपर लगी हुई नैनों की माल ॥
"पिता देशका" यों उंगली से माता उसे दिखाती है,
बालक माला सुन धीरे से उसको सीस झुकाती है।
अनुदिन दूर दूर से योंही पंक्ति जनों की आती है,
सुन सुन साभिमान शायद वह सूरति फिर मुसकाती है।
अथवा क्यों निज क्षुद्र हृदय का उसपर करते हो आरोप,
उसे न डर है, नहीं विस्मय है, नहीं गर्व है, नांहीं कोप।
नहीं चांदनी तोड़ सकी वह जिसके निश्चलपन की शान,
चतुर शिरोमणि कमलाके उन ओंठों से निकली मुसकान।
शशी कलङ्की की आभासे जिसमें उठतीं लहर महान,
उस गम्भीर हृदय से निश्चय हार गया वह सागर मान।
किया मचाकर शत शत दारुण खून भरे जग में उत्पात,
राज्यमुकुट ने पाप विमोचन पाकर उसका चरणाघात।
उसके चरणों की छाया में करती है लक्ष्मी विश्राम
पराधीन काले मुंह चल दो नहीं तुम्हारा यहं कुछ काम ॥
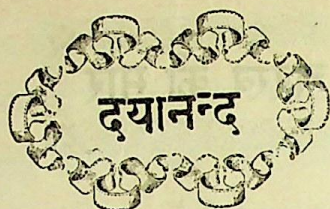
( २ )

पलितधवल धूली धूसर इस माता के तनका इक भाग,
अश्रुमयी गङ्गा ने धोकर कर पाया किञ्चित् बेदाग।
दिव्यनयनगोचर तेजोमय बनी वहाँपर मूरति एक,
पूरी छवि विरलोंने देखी जिनका उज्वल हुआ विवेक।
बढ़ती है, नहिं घटती इससे उसकी कुछ भी शोभा नेक,
वाशिङ्गटन से बढ़कर उसके मुखड़े पर आभा उद्रेक।
कमला दूर खड़ी कर जोड़े पाने को कुछ आज्ञादान,
लिया कामने रूप धर्म्मका कर उसके चरणोदक स्नान।
हुए शैल पाखण्ड पापके खा चोटें बालू के ढ़ेर,
उसकी एक अटल छाती ने दिया जगत् को पीछे फेर।
लोभ मोह मद मत्सर छोड़ो, छोड़ो रटना नाम इनाम,
कर्म्म नदी में न्हाकर आना यहां न निष्कर्म्मों का काम।

( ३ )

उमड़रहा है उधर देखलो सद्विवेक का वह प्रतिवाद,
द्वेष मथित योरोपके सिर का परिकथित जङ्गम उन्माद।
पापिजनोंके रोने में मिल सौ सौ मुग्धजनों का नाद,
घोर आरती करता जिसकी, जिसका शोणित भरा प्रसाद।
नृत्यभूमि बच्चों की छाती रंगा रुधिर में लाल निशान,
एक लक्ष्य है करना जिसका हंसते नगरों को शमशान।

## महात्मा गान्धीका उदय

( ४ )

उसी भूमि में दशा देख यह उपजा फिर वैसा इक वीर,
निर्भय निश्चल मुद्रा जिसकी नैनों से बहता है नीर।
राज मुकुट सिंहासन डोले, डोले फूले पापी पेट,
नीति निपुण धर सिर हाथोंपर लगे सोचने नई लपेट।
तोपों की चरखी फिर घूमी, लगे छोड़ने खड्ग मियान,
लगा मौत का पंख उधर से, बढ़ आये श्रीयुत विज्ञान।
अट्टहास कर दैत्य रूसका करता है इनका अपमान,
घर घर में जब आग लगेगी क्या कर लेंगे ये सामान।
भारत के पर, खड़ी द्वार पर रोक रही है मूरति एक,
इस भीषण उन्मत्त असुर का स्मेर वदन पैरों को टेक।
किरच कटारी तोप तमंचे सब मानेंगे निश्चय हार,
नट नागर की लीला देखो जीतेगी चरखे की मार।

( ५ )

ऐ तापस ! गंगातटवासी क्या न सुनोगे मेरी बात ॥
सुई कालकी नहीं फिरेगी घड़ी तुम्हारी बीती जात ॥
जगत् पिता ! कहलायेगा वह लेते हो तुम जिसका नाम ॥
पर उस दिनके लाने में कुछ नहीं पाप यदि आओ काम ॥

( ६ )

ऐ ! सुकुमार सृष्टि धाता की तुम से भी पूछूँ इक बात।
सहज माधुरी, सम्पति तुमरी, उसमें भी तुम पिछड़ी जात ॥
दयानन्द के सुरमें मिलकर उमड़ रहा गान्धी का गान ॥
उठो प्रेम के रण को साजो प्रेम बुझे लेकर के बान ॥
कलरव गुञ्जित नव रसिकों का हो यह वसुधा इक उद्यान ॥
नई ज्योति हो, नई छिड़ें नित राग, रागिनी सुर औ तान ॥

# हिन्दी की आह

[ पं० बालकृष्णभट्ट की मृत्यु पर ]

मेरे हरे भरे उपवन की टूटी एक सजीली डाल।
एक पुष्प से सूनी रोती हा ! इस सूने हियकी माल ॥
विधवाओं की दुरवस्था लख पक्षपात को छोड़ा दूर।
हुआ अग्रसर सत्य मार्ग में किया पाप को चकनाचूर ॥
ब्रह्मचर्य की देख दुर्दशा किये यत्न बहुवार अनेक।
जो 'प्रदीप' ले पहिले आया इन हाथों की जो था टेक ॥
नीर क्षीर विवेकी सरको, छोड़गया वह हाय 'मराल'।
'बालकृष्ण' अब हाय कहाँ वह, कैसी हा तेरी गति काल ॥
शोक भंवर ने आ घेरा है इत उत कहीं न मिलती थाह।
रह रह कर इस दुखिया दिलसे ठण्डी एक निकलती आह ॥

# सित चांद चांदनी में

रातें गुज़ार दी हैं सित चांद चांदनी में,
मस्तों की चाह फिर भी मिटती न चांदनी में ॥ १ ॥

ऊंचे पहाड़ के एक टीले पै जाय बैठे,
वंसी बजा रहे हैं सित चांद चांदनी में ॥ २ ॥

धीमी सी इक नदी की आवाज़ आ रही है,
सुर विश्व दे रहा है सित चांद चांदनी में ॥ ३ ॥

जो कोई कान देता बह जाता बन के पानी,
गरदन हिला रहे हैं सित चांद चांदनी में ॥ ४ ॥

फटकार सब की खाकर स्वाधीनता के रागी,
यों राग गा रहे हैं सित चांद चांदनी में ॥ ५ ॥

दिन देव ! फिर हमारे, फिर भी तो वो फिरेंगे,
स्वाधीनता बहेगी, सित चांद चांदनी में ॥ ६ ॥

है आज भी रसीली, फिर भी रसीली होगी,
रस और पर वो होगा, सित चांद चांदनी में ॥ ७ ॥

—
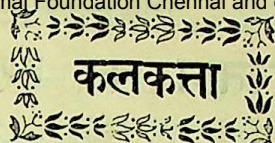
# कलकत्ता

देहधारी क्रौर्य धनपतियों का क्रीडागार है,
क्रीडा नरेशों का गगनचुम्बी ये कारागार है ॥ १ ॥
सिग्गार, सुख रथयान को निज सीस पर धारण किये,
बन्दगाड़ी, पैरगाड़ी, ट्राम मोटर आदि ये ॥ २ ॥
लक्ष्मी सखी इस सभ्यता के तत्व सब को खोलते,
धूम्र पायी पांव अविरत हैं चतुर्दिक दौड़ते ॥ ३ ॥
उड़ जाऊं ओह ! इस वायु में होता कभी का चल बसा,
इक भाग्यशाली काने म होता न गुरुकुल गर बसा ॥ ४ ॥
बाल ईश्वरचन्द्र पथराये यहां पर हैं खड़े,
दीनता के दृश्य दारुण सामने उनके पड़े ॥ ५ ॥
क्रूर शासन दण्ड का वह भी नहीं पर लांघते,
काल के अविचल नियम सबको सखे ! हैं बांधते ॥ ६ ॥
वज्रनादी हन्त दुर्दम ओंठ भी मुद्रित हुये,
बुझ गई वह ज्वाल भी यह क्रौर्य ने कौतुक किये ॥ ७ ॥

# कब्रिस्तान का दृश्य

एकान्त है निस्तब्ध , नीरव, शान्ति का सञ्चार है,
प्रासाद है, उद्यान है, यह स्वर्ग का क्या द्वार है ॥ १ ॥
देखो शिलापर सामने दिल का लिखा उद्गार है,
श्वेताङ्ग प्रभुओं के शवों का शान्त शयनागार है ॥ २ ॥
केश बिखरा कर तपस्वी वह नमेरु रो रहा,
अक्षुब्ध निद्रा में तले है बीर कोई सो रहा ॥ ३ ॥
मृत भी प्रासाद के इक जाति के यों सो सकें,
जीते न देशभाई हो जो खड़े होकर रोसकें ॥

# फूलों की चट्टान

*पुत्रों ने तेरे भारत ! दृढ़ता दिखाई कैसी । टेक ।*

गोविन्द के दुलारे कैसे दमकरहे थे,
　　दीवार जैसे बढ़ती बढ़ती उमङ्ग तैसी ॥ १ ॥
टुकड़े हजार करदो चाहे रतन के भाई
　　हर एक कण्ठ में होगी आभा तो इक जैसी ॥ २ ॥
आंसू ये कैसे क्या अब पिंघलेंगे रत्न भाई,
　　क्यों चित्त में ये लाते शङ्का भला ये ऐसी ॥ ३ ॥
निर्मलता चित्त की ये कहने है आई बाहर,
　　आये थे पहिले पीछे जाते ये बात कैसी ॥ ४ ॥
आँधी हि, चाहे सागर उत्ताल थाप मारे,
　　चट्टान हंसके कहती हिलना हो चीज़ कैसी ॥ ५ ॥
सर हिन्द तेरी मट्टी सर हिन्द के रहेगी,
　　बीरों की रक्त धारा जिसमें मिली हो ऐसी ॥ ६ ॥
धन धर्म है हमारा जिसका बना यों गारा,
　　दीवार कैसी होगी ईंटे हों जिसमें ऐसी ॥ ७ ॥

# अमर-अन्त
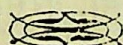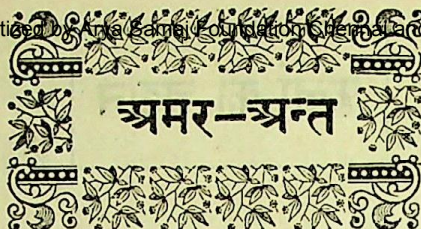
स्तन्य पिया जिनके संग उनके रुधिर सना कर में करवाल,
पितृ कंठ सिंहासन सीढ़ी, जप तप जिनके माया जाल ।
ठण्डा दिल होता था जिस का देख प्रजा के दिल की ज्वाल,
डर कर जिसके पास सरक कर पहुंच सका था काल कराल ॥
जो अभिषिक्त हुआ आँसुन से पत्थर जिससे माने हार,
अभिनन्दित करता था जिसको दीन प्रजा का हाहाकार ।
उस दारुण दिल्लीश क्रूर की सुनत चढ़ाई भड़की आग,
चारु हासिनी मरु भूमिने रणका विकट अलापा राग ।
झुकते ही सिर रिपु के दीखे अथवा रणमें खाते धूल,
वीर रुधिर से सिञ्चित जिसका था इक २ पत्ता अरु फूल
इक २ घाटी पावन जिस की पातिव्रत घर जिस मेवार,
जन्म सफल माना पावक ने देह पद्मिनी का सिर धार ।
उठी उमङ्गें. बढ़ी तरङ्गें रण रङ्गीले दमके ज्वान,
अदम दमामा गरजन लागा रणसिंहे के फड़के प्राण ।
उन्नत चपल विकट गर्बीले हय नायक पर हुआ सवार,
प्रभावती का रुक्मिणि मोचन वीर आर्य्यजन धर्म्माधार ।
आंखें बरसीं, खीलें बरसीं, बरसी फूलों की बौछार,
लगा हिलोरे मारन हिय में अदम उमंग का पारावार ।
पीछे चण्ड सजीला दश हज़ार नगरी का द्वार,
अन्त लला सिरमौर चला फिर शक्तावत अगला सरदार
छत्रपती झाला की रह २ कर झनक रही दुर्दम तलवार,

चले हाथ बीरों के मूंछन रह २ उठती जैजै कार।
"घाव सजी छाती से आना नाथ! बीर विजयी आना,
पीठ घाव ना लगने देना कोख न कारिख बस लाना।"
सहधर्मिणी का पाप सन्देशा पाय बहिन का मङ्गल काम,
भक्ति और उत्साह भरे चित, करके जननी चरण प्रणाम,
जन्मभूमि हित दीक्षित होकर, कर में उज्वल भाला धार,
मारू बाजा लगा गरजने सब के चित में मोद अपार।
दमक उठे मध्यान्ह सूर्य्य से मुख मण्डल वीरों के लाल,
रङ्गभूमि उतरी रण चण्डी टापन दीनी रह २ ताल।
चंण्डीसिंह के चित एक बस बार २ उठता सन्देह,
बार २ फिर कर चितवत चितसों अब तक मिटा न नेह।
नव कंकण मण्डित नेह दीखा खिड़की से इक कोमल हाथ,
डोरी उस में एक लगी थी अविचल मन भी खेंचा साथ॥
अकुला कर वह बीर बाँकुरा मुड़ कर आया घरके द्वार,
"धर्म्म निभाना" यह सन्देशा कहलाया फिर जाती वार।
धर्म्म परायण वीरवंशजा देवी का ऐसा अपमान,
हुआ सह्य नहीं तत्क्षण हियमे बचन लगे वह बाण समान।
एक हाथ से केश संभाले एक हाथ में लिये कटार,
पातिव्रत अभिमानिनि आई राजपूत रमणी तब द्वार।
"नाथ देह यह तुम्हें न करने देगा जन्मभूमि उद्धार,
जन्मभूमि की हित हत्या लखि जीये जो उसको धिक्कार।
इसी देह से नेह लगा जो लो इसको भी ले लो साथ,"
यों कह विकट कटार घुमाई कण्ठ उतारा अपने हाथ।
मर्माहत कर्त्तव्य मूढ़ हो क्षणभर ठाड़ा आँखें मीच,
जीवन निस्पृह होकर बांधा वह मस्तक वक्षःस्थल बीच।

यवनराजके भाग्य चन्द्रका उदित हुआ वह राहु कराल,
केशपाश वह घिरा मेघसम रिपुदल पर छाया तम जाल ॥
दिव्य विचेतन मुखमण्डल वह जीवन भरता था जिस भाँति,
वीर घोष और बाघ गर्जना उसके आगे तुच्छ लखात ॥
पती हृदय से उचित निलय में पाया उसने अचल निवास,
पवनसहस लोहू पीकर भी चण्ड खड्ग की बुझी न प्यास ॥
मान भङ्गकर दिल्लीपति का जूझे चण्ड महा बलवन्त,
सती रुधिर-अक्षर से अङ्कित होगा सदा "अमर" यह अन्त ॥

# वीरमहिला जोन ड आर्क

( १ )

शोणित पंकिल देह हुआ सब केशपाश विच्छिन्न हुआ,
उन्नत मस्तक वह गरवीला रिपुमदमर्दनखिन्न हुआ।
पराधीन हम, सोच सोच यह मरणाधिक आघात हुआ,
चारु हासिनी फ्रान्स भूमिका मुखड़ा अश्रु स्नात हुआ ॥

( २ )

शेखर-शयनोचित योरूप का वह सरोज विम्लान हुआ,
सुधा-मधुर—संगीत-वर्षिणी वीणा का अवसान हुआ।
अतुल कौतुकी नटवर की तब लीला का अवतार हुआ,
अतिशय मृदुल शिरीष कुसुम से महाशैल संहार हुआ ॥

( ३ )

रण का बाना धर बन देवी करने चली दीन उद्धार,
मीलित नयन हुए भक्ती से कर में माला करै विहार।
दिव्य छटा कमनीय बरसती, भृकुटी मण्डित भाल विशाल,
हुआ त्रिवेणी-सङ्गम पावन मज्जन से कटते दुखजाल ॥

( ४ )

बूढ़े, बालक, धनी दरिद्री, नागर, गवंई, अरु सरदार,
दुखिया, सुखिया, वीर, भीरु सब जहां कहीं पावैं नरनार।
उमड़ि उमड़ि कै पीछे धावैं वहु दिशि उठती जय-जय-कार,
गर्ज रही रण चण्डी अब तो बचि है सो जो मानेहार ॥

( ५ )

दिव्य मन्त्र से दीक्षित होकर चला सैन्य जह शत्रुनिशान,
उन्नत मस्तक किये दुर्ग पर लहराता था भर अभिमान।

मारू बाजा गरजन लागा गोलन गड़ गड़ दीनी ताल,
होली खेलें वीर बांकुरे बरसै शोणित उड़ै गुलाल ॥

( ६ )

बाण बरसते जैसे आई सावन भादों की बौछार,
गोले ओलासम चलि आवें, जहां पड़े तह करदे छार ।
लगी दुर्ग में आग एकदम ऐसा घोर हुआ घमसान,
रुण्ड मुण्ड सब कड़कन लागे पलमें दीखन लगा मसान ॥

( ७ )

हाहाकार मचा रिपुदलमें, विजय तिलक चढ़ि, आवा माथ,
मंहगी जीत हुई पर भाई, देवी पड़ी शत्रु के हाथ ।
उसके मुख मण्डल पर भरभी दीखी नहीं दुःख की रेख
लज्जित, विस्मित नम्र हुए वह पापी भी यह साहस देख ॥

( ८ )

क्रूर कलंकी कर में पड़कर दिव्य देह वह भस्म हुआ.
पर स्वतन्त्रता कल्प कुसुम का इसी भस्म पर जन्म हुआ ।
यही पुण्य है यही तीर्थ है इस रज को माथे लाओ
यहां चढ़ाओ नयन-नीर की धारा; सहृदय कहलाओ ॥

*नीकी न लागै फीकी ऐसी ये होरी ॥ टेक ॥*

आज सखिन में बात सुनी मैं, लेके सैन दिल्लिश चढ़ोरी ॥ १॥
आये ज़नाने फिरते लुकाने लीने पिचकारी रंग बोरी ॥ २ ॥
सान धरावो, फाग मचावो, करिये न तंह हि सीनाजोरी ॥ ३ ॥
छूटें फवारे शोणितवारे मलो लाल धूल की रोरी ॥ ४ ॥
झीलम झनकैं, दामिनि दमकैं, घोड़े नाचैं तेथाई थेई थोरी ॥५॥
बाना रंगूगी, मदमें भरूंगी, रंग केसर को घोरी ॥६॥
सेज रचूँगी, गोद धरूंगी, मचे लार लपक मोरि होरी ॥७॥
जीत के आवो, मान बढ़ावो, कहा मान चलूं कर जोरी ॥८॥

*संभल ऐ पावस की मेघमाला ! ये कोई परदा हटा रहा है ।*

घमण्ड सूरज का श्याम कोई ये चान्द आकर घटा रहा है ।।
सम्भल के बाजे बजायं, जिनकी खुशी है रोने में बेबसों के ।
कड़ाके बिजली के लानेवाली ये कोई बंसी बजा रहा है ।।
जो दीये अपने जलाया करते हैं दिलकी चर्बी से दूसरों की ।
सम्भल के बैठें ये कोई उंगली पै यों सुदर्शन घुमा रहा है ।।
वो कौन चोटी पै बूढ़े पर्वत की रो रहा है बिलख २ कर ।
कहो कि बस अब ये दिल बंधाने दुलारा, माता का आ रहा है ।।
गरजता कोई, भड़कता कोई, वह शान से मुस्करा रहा है ।
कथा पै अपनी लजा रहा है, धरम की सेना सजा रहा है ।।

# विजया-दशमी

*रहा अब है क्या ऐ राजन् ! तुम्हारी भेंट लाने को ।। टेक ।।*

धनुष-टंकार थी उस दिन हज़ारों दिल दहल करती ।
गज़ब अब मैं समझता हूं फ़क़त ताली बजाने को ।।
खिले हंसते जनों औ फूलों की माला थी उस दिन तो ।
यहां कलियां हैं मुरझाई तुम्हें झर झर रुलाने को ।।
वह जय जयकार थे उस दिन न अपनी बात सुनती थी ।
धड़कता दिल है नाटक में भी अब जिह्वा हिलाने को ।।
क़दम रखते थे उस दिन तो मृदुल उजले दुशालों पर ।
बिना वस्त्रों की अब तो देह है आगे बिछाने को ।।
न वीणा है न भेरी है न बंशी है न शहनाई ।
यहां कुचले दिलों का अब है बस रोना सुनाने को ।।
फंवारे सैकड़ों उस दिन थे नगरी प्रेमरसवर्षी ।
नयन जल रोती जनता का क्या अब लाऊं चढ़ाने को ।।
प्रकट हो फिर दिलों में चाहे इनको भस्म ही कर दो ।
हमारे तो तुम्हीं बस हो, कथा अपनी सुनाने को ।।

# विनीत विजेता

*भारत के सच्चे पुत्र ने दुनिया को उभारा ।*
*उजियारा कर दिया नया तम जाल उजारा ।। टेक ।।*

जय लोभ में न शस्त्र भी भारत के हैं सने ।
ये वीर जग दिखा गया भारत का दुलारा ।।
विजय सजा बिनय झुकाओ प्रेम से भरा ।
महिमा का इक दिखा गया दुनिया में नज़ारा ।।
सीखो विनय औ वीरता कुछ राम से बनो ।
जीवन से फिर फड़क उठे उद्यान हमारा ।।
है धन्य भूमि जिस के ऐसे दिव्य पुत्र हों ।
हैं धन्य हम इस गोद में अवास हमारा ।।
काली घटा हटे सखे ! तारा वो भाग्य का ।
चमके नई चमक से दुन्यिा में हमारा ।।

# दीप माला

धनि भाग भये सखि कातिक के प्रभु ने जो अमावस कीन्ही उजेरी
परलोक को चन्द्र सिधार गयो जन सागर में पै हिलोरें घनेरी।
अचरज की यह कौन कथा उदयाचल पै रघुचन्द चढ़ेरी,
इस काली निशा में दो चाँद भये अमराचल वै यति चन्दचढ़ेरी

इधर है काली उधर उजाली इधर अमावस उधर दिवाली।
ये रात कैसी निराली आई इधर हंसाकर उधर रुलाकर ।।टेक।।
इधर विजेता की लार हे हैं सजा सजा कर तिलक की थाली।
इधर धरम की हैं बुझती ज्योति नयी शिखायें जला जलाकर।
सुनो निशा क्या ये कह रही है तुम्हें कहानी सुना सुना कर।
वह काम करना कि रात काली भी हो उजाली जो तुमको पाकर।
डरो न जीवन के रण में प्यारो जरा भी घावों से एक पलभर।
भरेगा मिल कर ये लोक सारा उन्हें यों मरहम लगा लगाकर।
यह शान भारत की काले चोले में मुंह छिपाए खड़ी हुई थी।
विजय से लौटा दुलारा इस का, तो खिलती परदा हटा हटा कर
जो मिलने प्यारे से तेज का पुंज उड़के आनन्द धाम पहुँचा।
इधर उधर जो बिखरे थे छींटे उन्हें ये लाई उठा उठा कर ।।
जरा तो सोचो क्या शान होगी, वह कैसा सबका ही प्यारा होगा
कफ़न की जिसके यह आरती सब हैं गाते दीये जला जला कर ।।
है आज भी और फिर भी होगी मगर दिवाली रंगीली होगी।
हमीं हों बत्ती, हमीं हों दीया, हमीं जलें जब कि जगमगा कर।।

# कुलपति का स्वागत

*दिलों के राजा दिलों के स्वामी फले व फूले तुम्हारी आशा ॥ टेक ॥*

( १ )

एक आंख आँसू ढलक रहे हैं, एक आंख जय जय पुकारती है।
इधर धड़कती है धीमी छाती, उधर उभरती छबीली आशा ॥

( २ )

इधर चरण में यह जाति आती इधर ये खेती है लहलहाती ।
ये मिल तुम्हारे ही गीत गाती, फले व फूले तुम्हारी आशा॥

( ३ )

चले हो हंसते पहिन के बाना, ये केसरी अब दिखाने जौहर,
रुलाचले हो जिन्हें यहाँ पर भला लगावें वे किसपै आशा ॥

( ४ )

न कल्पना भी जहां थी जाती, वहां तो आसन जमा चुके हो,
वह कौनसी अब रही हैं चोटी, जहां लगाई है आज आशा ॥

( ५ )

रङ्गा था बाना जो खून से उसने पीके विषका कराल प्याला ।
वह आज कन्धों पै ठीक उतरा, बंधी है भारत तुम्हारी आशा ।

( ६ )

खुशीका दिन क्यों न हम मनावें, मुकुट तुम्हारे जो सिरसे उतरा।
उतर के सिरसे वह पैरों आया, नयी बढ़ी है हमारी आशा ॥

# कुल-सन्देश

*इस कुलभूमि का ये इक सन्देश सुनाना आज है ।। टेक ।।*

साज सजै सब आज वसन्ती शीतल सुरभि समीर,
फिर भी ध्यान एक धर किञ्चित् होता चित्त अधीर ।। १ ।
जड़ चेतन सब मोद झूमते समय चित्त अनुकूल ।। २ ।।
मेरी पर इस हरी गोदके पांच बिछुड़ते फूल ।। २ ।।
वर्ष चतुर्दश सीस तुम्हारे फेरा कोमल हाथ,
इन्हीं फूलों में खिले औ खेले आज बिछुड़ता साथ ।। ३ ।
कर किसलय से देवनदी यह नित करती थी प्यार,
वृद्ध पितामह हिमगिरि हंसता वत्सल नैन निहार ।। ४ ।।
गुरुजनकी कर्कशता भूलो करो न कुछ परवाह,
किसी हृदय में चलकर देखो बढ़ता प्रेम अथाह ।। ५ ।।
नये रङ्ग में नये लोक में अब रखते हो पांव,
अपने रङ्ग औरों को रंगना यही जननि का भाव ।। ६ ।।
माता भगिनी कुलबंधुओं पर हो यदि अत्याचार,
तेज तुम्हारा दमक उठे तब हो खलदल संहार ।। ७ ।।
सींच रही आंसू से मुखड़े जनम भूमि यह आज,
समरथ भर हित साधन उसका यही तुम्हारा राज ।। ८ ।।

# गुरुकुल की नन्हीं सृष्टि का जातीय गीत

*देवदूत भी घर आकर यह हम को बात सुनावेंगे*

चलो, खिलो, फूलों में तुम, सुख अत्यन्त दिखावेंगे ।
पढ़ना लिखना कुछ नहीं होगा दिन भर खेल खिलावेंगे,
दिन भर झरनों और फूलों में पक्षी राग सुनावेंगे ।
मिलता सब दिन खाने को वहं मिसरी दूध मलाई है,
'इकले नहीं जाते' यों कहेंगे, हम सब प्यारे भाई हैं ।
जन्मभूमि यह हरी भरी है, हमको सब से प्यारी है,
माया यह अति प्रेम भरी है छवि इसकी उजियारी है ।
आलस लोभ है जो हम करते इस से यह दुखियारी है,
चरणदलित है फूट से इस पर पड़ी विपति अतिभारी है ।
इस का हित करने को जाना ओह, कैसा सुखदाई है,
हँसते हँसते साथ चलेंगे, हम सब प्यारे भाई हैं ।
'गुरुकुल' प्यारा देखा हमारा त्रिभुवन में सुन्दर उद्यान,
ध्वजा को इसको हम लखते हैं सीस उठा कर भर अभिमान,
इस मे हम निसि दिन खिलते हैं करते हैं मीठी मुसकान ।
इस से बढ़कर स्वर्ग कौनसा बतलादो है हम को स्थान,
गङ्गा और हिमगिरि की प्यारी भूमि यही मन भाई हैं,
इस में हिलमिल सदा रहेंगे हम सब प्यारे भाई हैं ॥

अपने से हमको प्यारा 'कुल' हो सदा हमारा ॥ ध्रु० ॥
विष देने वालों के भी बन्धन कटाने वाले,
मुनियों का जन्म दाता कुल हो यही हमारा ॥ १ ॥
प्राणों के प्यासों को भी छाती लगाने वाले,
वीरों का जन्म दाता कुल हो यही हमारा ॥ २ ॥
कट जाय सिर न झुकना यह मन्त्र जपने वाले,
वीरों का जन्म दाता कुल हो यही हमारा ॥ ३ ॥
स्वाधीन्यदीप्तितों पर सब कुछ बहाने वाले,
धनियों का जन्म दाता कुल हो यही हमारा ॥ ४ ॥
निज जन्मभूमि का हित होता जहां कहीं हो,
सींच हृदय रुधिर से कुल वीर उसे हमारा ॥ ५ ॥
तन मन सभी न्यौंछावर कर वेद का सँदेशा,
जगमें ले जाने वाला कुल हो यही हमारा ॥ ६ ॥
हिमशैल तुल्य ऊंचा गंगासा पुण्य निर्मल,
भटकों का मार्गदीपक दुखियों का हो सहारा ॥ ७ ॥
आजन्म ब्रह्मचारी ज्योती जगा गया है,
अनुरूप पुत्र उसका कुल हो यही हमारा ॥ ८ ॥

---

* यह गुरुकुल का एक "कुल गीत" है ।

# गुरुकुलोत्सव

१

खिली दिवारें खिले हैं मुखड़े नयाही रंग कोई छारहा है ।
यह आज का दिन सभी दिलों में नया ही जीवन दिखारहा है

२

यह कौनसा दिल है जिस में प्यारो ! न आज आनन्द उमड़ रहा है।
नई ही आभासे ये हमारा प्रसूनवन लहलहा रहा है ॥

३

नये ही ब्रतका ये दिन है भाई, नया ही अब काम करना होगा ।
हमारे जीवन की मालिका में इक और मोती यह आरहा है ॥

४

हर एक शाखी को फूलमाला से अङ्क माता का भरना होगा ।
सरस्वतीका यह पुष्पवन है यह याद हमको दिला रहा है ॥

५

प्रणाम उस प्रेममय को करते हैं आजसब मिलके प्यारे भाई ।
हर एक खिल के फूल जिस की अपार लीला को गारहा है॥

# एक स्नातक का कुल वियोग

*दुनिया के चार दिनके मेरा है आशियाना ।*

तुम को नहीं उचित यों इस की हँसी उड़ाना ।। टेक ।।
मैं छिप रहूंगा तुम को रोना नहीं जो भाता ।
आंसू नहीं ये सीखे मेरे पै बाज आना ।।
रो लूंगा फिर अकेला जी खोल कर वहां मैं ।
बन वृक्ष यों सुनगे पुर दर्द मेरा गाना ।।
ऐ आशियाने मेरे प्यारे खज़ाने मेरे ।
बेकल मैं हो रहा हूं, ये देश है बेगाना ।।
दिन भर उड़ान करके जब सांझ लौटता था ।
कैसे करूं वो ओझल तेरा मुझे बुलाना ।।
शरमा के नाहीं करना सब का वो फिर मनाना ।
फिर बीच बैठ सब के तानें नई सुनाना ।।
फलती रहे वो झाड़ी तेरा जहां बसेरा ।
गुलशन रहे हरा वो तेरा जहाँ ठिकाना ।।
कुछ की न बेवफ़ाई मुझ को जुदाई देके ।
क्यों कर मैं सीख लेता यों घोंसले बनाना ।।
खुश हूं यहाँ भी तानें हैं ही यहां भी कोई ।
बस में नहीं हैं लेकिन तेरा भी याद आना ।।
तेरी ही याद ने कुछ जादू सा कर दिया है
कब का भुला चुके थे हज़रत तो चहचहाना ।।

# कुलाद्वियुक्तस्य वियोगवार्त्ता

( १ )

पश्यामि तान्वागधिदेवतायाः। सखीनुदारस्मितलासितानाम् ।
रसेनवर्षादिवसान्निपिक्तान् , ममापि नेत्राम्बुझरैर्निषिक्तान् ।।
सौदामिनीनां ज्वलदट्टहासे, पुष्पस्मितानां सुरभौ विलासे ।
मयूरलोके स्तुवदम्बुवाहे वनस्थलीस्मेरहरित्प्रवाहे ।।
मुग्धैर्भ्रमद्भिः सितभक्तिभाव,मूर्ध्वंगतैर्यत्र कृषीवलानाम् ।
निमेषहीनैर्नयनैर्निपीते, वात्सल्यसारे करुणामयस्य ।।
अनेकरूपेष्वविभिन्नरूपो, विभाव्यमानो नयने निमील्य ।
आनन्दरूपः परमस्य पुंसो, यदास कोऽप्युल्लसति स्म सर्गः ।।
तुषारनद्यावलिता नितम्बे, समुज्ज्वलत्वात् स्फुटलीनभागा ।
आपादि येषु प्रतिविम्बभावं, श्यामायमाना तटवृत्तराजिः ।।

२

धन्या महीयं मधुरै रथाङ्गै रचिन्त्यलीलाकुशलस्य धातुः ।
उन्मज्जता यत्र दिगन्त मध्या ल्लिप्ते सुदूरं नवनीरदेन ।।
स्निग्धेन्द्र नील द्युतिजैत्रभासि, पश्य प्रतीची गगनाम्बरेऽस्मिन् ।
बालार्कचामीकरचारुभासा, स्नातेन्द्र चोपेन विचुम्ब्यमाना ।।
आनन्द्वि रम्या वनराजिलक्ष्मीः, स्वतूलिकानां चरमैर्विलासैः ।

३

भारातियोगाज्जलसीकराणां, संक्रामता गन्धवहेन मन्दम् ।
स्नातानि मीलन्ति विलोचनानि हृदा सहानृत्यति रोमराजिः ।।
इयं पुरश्चुम्बति हन्त दोला । क्रमेण शाखे शिरसा पदेन ॥
अधः स्थितेनाऽहमहम्परेण, प्रतीक्ष्यमाणा वटुसंकटेन ।।
अहो कथं श्रान्त सुखानुसुप्तः, संवीज्यमानः पवनेन यामि ।
रोमाञ्चिथ कण विनर्त्तयन्ती, तनौ विसर्पत्युपहासिशुद्धी।।

धन्या अहो ये गतचिन्त्यमेवं, वयस्यगम्ये विनिराशतायाः ।
अत्रैव लोकेऽनुभवन्ति हन्त, क्षणंसुखं व्योम चरैकलभ्यम् ॥

वत्सा इवैते वटवः प्रयान्ति, कण्ठावलम्ब:पटखण्डसारना: ।
स्वैरं समास्वादयितुं फलानि, सास्पृह शाखास्थगलोकितानि ।

अहोवटूनां तरणे पटूनां,परस्परस्पर्धि कथारतानाम् ।
यथा यथोदेति नदी प्रपूर स्तथा तथा नृत्यति मोदपूरः ॥

*कब तक खड़े रहोगे फिर भी तो आना होगा ।। टेक ।।*

रवि शैल की शिखा पर वेदी तो जल चुकी है,
कब तक खड़े किनारे यह सुर मिलाना होगा ।। १ ।।
होता स्वयं बने हैं अब तो मरीचिमाली,
अब भी उचित तुम्हारा क्या हिच किचाना होगा ।।२।।
कुछ भी मिला नहीं तो अपनी ही आहुति दो,
साधें जो मौन फिर भी कहाँ मुंह छिपाना होगा ।। ३ ।।
रहने न ऐसे दूंगा, दीवाना होगया हूं,
आओगे या पकड़ कर फिर मुझको लाना होगा ।। ४ ।।
या सामने उठोगे या साथ मेरा दोगे,
कोने में छिपने का भी कोई ज़माना होगा ।। ५ ।।
कहती दहक दहक कर वह देह यों सुनाकर,
इनका भी हाय जलमें कोई ठिकाना होगा ।। ६ ।।
आगे भी पग धरोगे गुणगान ही करोगे,
मैं सुनके थक गया हूं कुछ कर दिखाना होगा ।। ७ ।।
जगदीश बेचते हैं सिक्का है एक पौरुष,
भोगेंगे और तुमको गाना ही गाना होगा ।।

टि०—यह कविता स्वा०दयानन्द को ध्यान में रखकर आर्यसमाजके जन्म दिन के उपलक्ष्य में बनायी गयी थी।
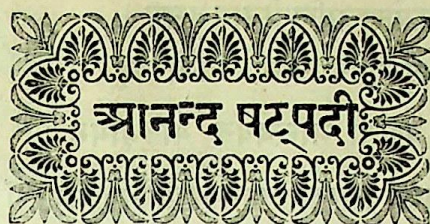
गहन गिरिगुहासु ध्वान्तपूर्णाटवीषु,
हिमपिहितमुखासु श्रान्तसुप्तं नदीषु ।
विधुमिव घनमालावारितं क्लान्तकान्तं,
कमपि विदितसारं नौमि बालं विशालम् ॥ १ ॥

---

हिमपरिगलदङ्ग कण्टकक्षुण्णदेहं,
सततरुधिरधारालिप्त मप्युन्लसन्तम्,
तुहिन गिरि नितम्बे तेजसा भासमानम्
तरुणरविसमानं नौमि कश्चिद युवानम् ॥ २ ॥

---

खलबलदलनायासह्यभासा ज्वलन्तम् ,
सदय मथ दृगन्ता नार्त्त लोके भरन्तम् ।
दुरित कलुपितानाम्पावनन्तीर्थ राजम्,
नमत कमपि शान्तिज्योतिषोः सङ्गमं तम् ॥ ३ ॥

---

रुधिरपरिगतानां कातरालोकिनीनाम्,
विदययवनशस्त्रं वीक्ष्य कम्पाहतानाम् ।
गतशरणगवामासान्त्वनं स्नेहसान्द्रम् ।
नमत कमपि गोपं दुर्जनासह्यकोपम् ॥ ४ ॥

नयनजलकपोलक्षालिनीनामजस्रम् ।
विशरणविधवानां नेत्रनीरप्रपूरे ।
सदयमपि वहन्तीं सान्त्वयन् मातृभूमिम्
चरमकरवलम्बी ध्यायतां कोऽपि वीरः ॥

---

नयनपथमुपेते जीवने रन्तकाले,
विगतसकलशक्तीन् मानवान् जीवयन्तम् ।
प्रशममुपनयन्तं दुःसहेनापि धाम्ना,
प्रणमत शिरसा तं ज्योतिषां कञ्चिदन्तम् ॥ ३ ॥

## ऋषि—उत्सव

(१)

( शाहाना तिताला )

*"हम आते हैं आज अपने नायक के पीछे"* ॥ टेक ॥

[१]

यह फिर आज मंगल यह फिर क्यों बधाई ।
रणाङ्गण में भेरी यह किसने बजाई ॥
अमर मौत की खोज फिर क्यों उठ आई ।
यह जीतों के मरघट में क्यों जान आई ॥
तरङ्गें उठीं केतुसागर में कैसे ।
हिलोरे दिलों में ये फिर आज कैसे ॥

[२]

यह थाली में किसके तिलक की तय्यारी,
ये रंग लाल कैसा ये कैसे पुजारी ।
यह गर्मी है पूजा में क्यों आज भारी,
दिलों में जगी ज्योति ये कैसे प्यारी ।
ये झनकी भला आरती क्यों कमर में.
चकाचौंध चपला की क्यों है करों में ॥

[३]

अभी तो लखी है भला एक झांकी.
अभी देखना रंग कैसे हैं बाकी ।
दया दृष्टि की जिसकी हैं कोर बांकी ॥

पुकारें सुनीं उसने आक्रान्त मां की।
अभी लाल रंग में ये अम्बर रंगेगा।
ये केसरिया बाने का जौहर रचेगा॥

[४]

ये आतङ्क! ओह! कैसी भीषण ऊंचाई,
झपेटें प्रभञ्जन की ये कैसी आई।
हिमाचल है क्यों ऐसे घबराते भाई,
ये लोरी, ये थपकी सुलाने को आई।
गज़ब है ये लोरी! ये ढंग हैं निराले।
यहां कल्पना के भी पर होते ढीले॥

(५)

चले क्यों यहां पर अटकते हो भाई,
शिखा पर है जाना ये आधी चढ़ाई।
चलो देखें चोटी ये अब है उठ आई,
अहो! रंग कैसा छवी कैसी छाई।
बिना रोक दिल की यहां धार बहती।
यहां रश्मि भानू की हैं नृत्य करती॥

[६]

हिमाचल शिखा यह अहा! शान्त कैसी,
ये दिल में अकारण बसी शान्ति कैसी।
अहा! पुण्य ऋषियों की है गूंज कैसी।
नहीं कान, दिल सुनते झनकार ऐसी॥
हमारा विजय लेख यहां पर लिखा है।
हिमाचल की ओह! कीर्तिकी यह शिखा है॥

[ ७ ]

"तू कैसे मिलेगा" यह कैसी ध्वनी है,
ध्वनी में व्यथा फिर ये कैसी घनी है।
स्थली शान्त निर्जन पतितपावनी है,
ये मायाकी क्यों रग भूमि बनी है।
यहां कौन प्यारे से बिछुड़ा पड़ा है,
ज़रा मुड़के देखो ये योगी खड़ा है॥

[ ८ ]

अहो! धन्य योगीश! जीवन हमारा.
झुकातेज के आगे झट सिर हमारा।
कुछ आंखें झपक के जो उसको निहारा,
हृदय झट वहाँ होके पानी हमारा।
दमक यह अदम फिर भी मुखपर उदासी,
धुआं भानुमण्डल में यह बात कैसी॥

[ ९ ]

यह लाली है कैसी! सखे तेज है,
नहीं तेज यह रक्त की धार है।
किया आज कांटों ने जीवन सफल है,
यही पुण्यका एक उल्लास थल है॥

[ १०. ]

अहा! आ मिला, आ मिला. मुख ये कहता,
यहीं रोओ रोओ खड़ा होके कहता।
सुनो क्या सुधाका प्रवाह अब है बहता,
यह बिछुड़ों का मिलना है क्या क्या बरसता।
हरे! आज माता ये आंसू बहाती,
कहाती कठिन देखो कैसी सुनाती।

[ ११ ]

"ऐ! राजों के राजा भिखारिन खड़ी हूँ,
तू है नाथ फिर भी अभागिन खड़ी हूं ।
मेरे दूध की धार दुनिया पली है,
अब अपने ही अंगो की भूखी खड़ी हूं ।
तरसते थे पाने को आसीस मेरा,
अब अपने ही पैरों में कुचली खड़ी हूं ।
मैं बरसों की हे नाथ, झुलसी खड़ी हूं;
धुआं है न केशों को खोले खड़ी हूं ।
मेरे वस्त्र और केश सब नोच डाले,
मैं अपनी ही अब खाल ओढ़े खड़ी हूं ।
बहाती हूं जल आग लेती सपाटे,
हुए रोम हैं आज अपने ही कांटे ॥

[ १२ ]

तुझे खोजता था मैं गलने को आया;
यहां छटपटाना अहो ! देख पाया ।
यहां आके तुझको प्रभो ! मैंने पाया,
यहां तूने आंखों का परदा हटाया ।
इसी दृश्य में तू दिखाता है सबको,
अतुल कौतुकी तू खिलाता है सबको ॥

[ १३ ]

यहां आकर तेरा मरम मैंने जाना,
धरम मातु सेवा में गलने को जाना ।
यही तेरा सन्देश है आज जाना
इसी युद्ध का अब है बाना सजाना ।
अहा ! मिल गया अब तू ओझल न होगा ॥
मुझे काम कोई भी बोझल न होगा ॥

[ १४ ]

जो बरसेंगे पत्थर मैं आंसू झरूँगा,
मैं दुश्मन के घाव अपना लोहू भरूँगा।
न पर्वाह रोने की कुछ भी करूँगा,
बिना रोक फोड़ों पर नश्तर धरूँगा।
मुझे बेड़ी माला सी प्यारी लगेगी,
पड़ेगी मुझे, औरों की तो कटेगी॥

[ १५ ]

पिता! लोक तीनों जो सजके भी आवें,
जो तूफान तोपों के बढ़ बढ़के आवें।
उठे सैन्य सागर तरङ्गे दिखावें,
मैं हूँ आज चट्टान वह आवें या जावें॥
सुनो पग यह मेरा अटल है अटल है,
"दयानन्द" के दिलमें भी तेरा बल है॥

[ १६ ]

चलो पाप क्या काम है अब तुम्हारा,
न अन्याय दुनियाँ में अब पग तुम्हारा॥
अटल है अमर है ये नायक हमारा,
अहा जगमगाता है नायक हमारा।
" हम आते हैं आज अपने नायक के पीछे"
नहीं देखा सीखा न मुड़करके पीछे॥
चलो आज कन्धे से कन्धा मिलाओ,
चलो पापसेना कुचल कर दिखाओ।
चलो हाथ बढ़ बढ़के अपने दिखायो,
बढ़ो आगे आगे न पग पीछे लाओ।
चलो मातृ सेवा का झंडा खिला है।
वहाँ आंख रख हंसते मरना भला है॥ १७॥

# मौरवी के मन्दिर में एक बालक और एक चूहा
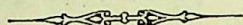
*अँधियारी तोरी मत बौरानी ।*

भोर भई पन्छी उठ बैठे, अजहूं कहे मैं जग की रानी ।।
करत अर्चना सब कर जोड़े, ना भूले ना फिरे मस्तानी ।
बुरा रतजगा भया आजको, तोरी बुरी विधना ने ठानी ।
'इक बालक इक चूहा मोरा, क्या करलें, न रहे भरमानी ।
ले समेट अपना अब डेरा, जग बाजेगी बड़ी सयानी ।
पल में माया मूषिक काली, प्रकटी धार मधुर रस सानी ।
जो अजहूं नहिं देख सकत हैं, तिन नैनन की जोत गंवानी ।
शिव मन्दिर में दुन्दुभि बाजी, साँचे शिव की महि थरानी ।
माहि 'मराल' छबि और न दीखे, पुलकित तन लोचन युगपानी ।

# श्रीपण्डित लेखरामजी की मृत्यु पर
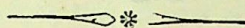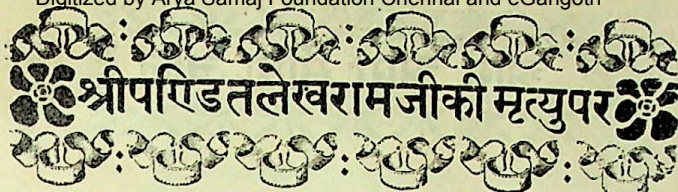
*शेख नादानी में अपनी तूने कर डाला ये क्या ? ॥ टेक ॥*

जिस शजर को जानकर ज़हरी कलम तूने किया,
इससे कभी तुझको पड़ा था अब तलक पाला न क्या ॥
सैकड़ों शैदा न होंगे ? ले उड़ी खुशबू हवा,
सो सकेगा चैन से अब तू उलट प्याला ये क्या ॥
एक काफ़िर तू बना होता लगाकर ओंठ से,
कुफ़ का अब फंस गया तू तान कर जाला न क्या ॥
दाग़ तुझको लग गया पर खूब होता जायगा,
खूने शहीदाँ से ये कपड़ा और उजियाला न क्या ॥
चोटे ज़बाँ की खाके तूने पेट पर हमला किया,
पर्दा अपना तूने जाहिल चाक कर डाला न क्या ॥
इश्क का बन्दा वो था तकलीफ क्यों हाथों को दी,
सैकड़ों दिल बींधकर वो डालता माला न क्या ॥

# आगे आगे सीधी चाल

वही कदम निः शंक पुराना जिसने की लंका पामाल ॥ टेक ॥
दाएं न देखो बाएं न देखो, रजकण समझो शैल विशाल ।
धार खड्ग की जहां पाप हो, जहां दीन हों उनकी ढाल ।
शान्त मन्द मुसकान ओठपर, उन्नत निर्भय निश्चल भाल ।
ऐसी छबी हो मौन सजाकर, लावे जब अपनी जैमाल ।
परम पुरुष का अरु पौरुष का, अटल भरोसा हो सब काल ।
आँख लक्ष्य से डिगे न पल भर, कितने ही कैसे हों जाल ।
चार पोथियाँ रख झोली में, हाथ तर्क काले कर बाल ।
नायक आगे चले तुम्हारा, तुम उलझन में क्यों बेहाल ।
आगे आगे सीधी चाल ॥

. . . . . . . . . . . . . . . . .
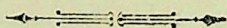
# राष्ट्र सेवा का एक पग

कहदो न पग रुकेगा आगे जो चल चुका है ॥ टेक ॥

दुनियां में बेड़ियों में जकड़ा रहे न कोई,
सन्देश सब से पहिले हमको ये मिल चुका है ॥
डाला था उसने बांहों पर बोझ ये हमारी,
उसका भुलाना अब तो बहुतेरा फल चुका है ॥
जगदीश की ये प्यारी सब से पुरानी वीणा,
गोलों की मार से तू इसको मसल चुका है ॥
टूटेगी और नांहीं ये बेसुरी बजेगी,
इसका ये साज़ सारा फिरसे संभल चुका है ॥
निकलेंगे राग मीठे बदले में गोलियों के,
शायद है तेरा दिल वो जो ना पिंघल चुका है ॥
मत भूल देख तारें इसको यही थमाले,
दीपक का राग इसमें कुछ जो निकल चुका है ॥
कुछ भी गिला नहीं है तूने लहू बहाया,
धुल करके उसमें चोला रङ्गत बदल चुका है ॥
राहों पै तूभी आजा एहसान करने वाले,
ताक़त में भूलकर तू काफ़ी मचल चुका है ॥
बनने से कौन रोके हमको गले की माला,
श्रद्धा का सूत्र दिल के मोती में डल चुका है ॥

---

टि०—यह कविता अमृत सर कांग्रेस में पढ़ी गई थी

हृदय का राजा देवस्थान हृदय का राजा हिन्दोस्तान ।। टेक ।

वृद्ध पितामह देवस्थान वृद्धपितामह हिन्दोस्तान ।
जलपति कोई थलपति कोई हृदय का राजा हिन्दोस्तान ।
क्रूर कर्म का काम नहीं है पाने को सन्मान ।
भारत को सब सीस झुकाते गौरव अपना जान ।।
अहा ! सजीला अहा ! हरियाला विश्व का यह उद्यान ।।
आवो आवो मंगल गावो मीठी मीठी तान ।।
जय जगदम्बे ! जय जय जननी जय जय गुण गण गान ।
तेरे दिन जो फेर न लावें, हम कैसी सन्तान ।।

---

स्वाधीनता के आज मिले रङ्ग रङ्गीले,
मुख दुश्मनों के हो रहे दिनरात पीले ॥ १ ॥

--

जब तक नसों में खून है एक राजपूत की,
तब तक रहेंगे पापियों के होश ढ़ीले ॥२॥

—oo—

सच्चे के सीस हाथ है दिन रात ईशका,
उनका सहारा हैं वही जो धर्म्म हठीले ॥ ३ ॥

—**—

जब जब ऐ ! मातृभूमि ! तुझ पै दुःख आयगा,
तब तबही खून बरसेंगे ये मेघ छवीले ॥ ४ ॥

---

टिप्पणी-यह एक नाटक के लिये बनाई गई थी ।

दीवाना सोचता है गर्दन हिला हिला कर ॥ ध्रु० ॥

(१)

क्या दिन कभी मुबारिक मुझको नसीब होंगे ।

हंसता चलूंगा रण में, सबको रुला रुला कर ॥

(२)

कर में रुमाल मेरे,, तलवार हो कमर में ।

पोछूंगा मैं पसीना, घोड़ा नचा नचा कर ॥

(३)

अंगुली उठेगी मुझ पर, हर दम बहादुरों की ।

हंसता चलेगा बन्दा, बीचों लजा लजा कर ॥

(४)

मैदाने जंग में जब घमसान खूब होगी ।

पहुंचूंगा ऐ मुसीबत ! तुझको बुला बुला कर ॥

(५)

औरों का तो कफ़न है, मेरा है लाल जामा ।

मिलना है मौत प्यारी, आँखें मिला मिलाकर ॥

---

चला है नौरङ्ग आज घरसे नई उमङ्गों में झूम खाकर ।। टेक ।।

(१)

थी कुछ हरारत सी इक हवामें थे सुनते हैं जङ्ग होने वाला ।
मगर पता था न यों नगाड़ा उछल पड़ेगा ये चोट खाकर ।।

(२)

झपट के मैं माँ के पास आया, सुना के पैरों में सिर नवाया ।
समझ के उसने मुझे उठाया लगी यों कहने मुझे दिखा कर ।।

(३)

'गी है तलवार वह पिताकी ये देखो छाती तुम्हारी मां की ।
से न बेटा कहीं लजाना समर में पीछे से चोट खाकर ।।

(४)

पवित्र होकर वहां से आया क़दम बहिन की तरफ़ बढ़ाया ।
"चले हो जाओ पै जल्द आना बहादुरों में बड़े कहा कर" ।।

(५)

न तुम सुनोगे हठीले भैय्या न मेरे हाथों जगत की नैय्या ।
नहीं तो कहती मैं दुश्मनों से ये छोड़ो हत्या शरम को खाकर ।।

(६)

वहां से आँसू मैं पोंछ आया बड़ा ये मैं जङ्ग जीत पाया ।
चला वहां से मैं इम्तहां को बहुत सा दिल को पढ़ा सिखा कर ।।

(७)

थी जोड़ हाथों को सिर नवाये जगत पिता से लगन लगाये ।
झिझक के मैंने जो पैर रक्खा उठी वो धीरे से मुस्कराकर ।।

( ८ )

इधर तो नैनों से जल की धारा था कर में खांड़ा उधर दुधारा।
वो अपने हाथों सजाऊं तुमको चलोगे सैंया जो पेच खाकर॥

( ९ )

चले ग़रीबों के काम हो तुम न देख मुझको निढाल हो तुम।
मगर है बिनती खड़्ग उठाना वहां भी फौजी रहम दिखाकर॥

( १० )

इधर ी मेहनत का काम होगा पराये अपने सभी तो होंगे।
करूंगी खमों को ठण्डा अपने उन्हें मैं मरहम लगा लगा कर॥

( ११ )

झड़ी थी, बिजली थी, या हवा थी, वो आग पानी का मेल क्या थी।
छूआ जो उसने बदन को आकर चढ़ा नशा वो चमक दिखाकर॥

( १२ )

यों उसको मैं ने जो पूरा पाया, व अपने दिल को अधूरा पाया।
शरम से मैंने तो सिर झुकाया चला यों मीठीसी मार खाकर॥

( १३ )

वो लेके वाहां से फिर उजाला पिया जो पीछे से एक प्याला।
अमर हुआ हूं वो घूंट पीकर वो मौत भागी है खौफ़ खाकर॥

---

बालक – अम्माजान, खिद्दो, ऊं ऊं ऊं।
माता – बिगल बजाले तूं तूं तूं।

(टालने के लिये)

छोड़ छोड़ मत साड़ी नोंच,
कौआ नहीं तो मारे चोंच।

बालक—ना ना, हम तो खिद्दो लेंगे,
माता—काका आवेंगे तब देंगे।
बालक – अम्मां काका कहां गये हैं ?
माता – भारत हित रणखेत गये हैं।
बालक – अम्मा कैसा हो रण खेत ?
माता – गोले जहां उड़ावें रेत।
बालक – आहा हा हम वी जावेंगे,
गोले से खिद्दो खेलेंगे,
उँह उँह उँह काका के पास।
माता – (प्रणय कोप से गेंद देकर)
ले रे हठीले जा खा घास।

बालक — अम्मा आखिर हम ही जीते,
खिद्दो लेकर बीस फजीते,
( अम्मां हँस बोली दे प्यार )

माता — बनना बच्चा अजय सवार ।
अम्मा से लड़ खिद्दो लाया,
मटक मटक कर गाल फुलाया ।
चला शान से कूर अधीर,
घर में जीत बना है वीर ।

---

मोहि तबलों चैन परैना ।। टेक ।।

कली रूप लखि जग बौराना नैन मोद उघरै ना ।।
महक उड़ी मग खड़े बटोही मेरो चित्त भरैना ।।
फिर तन में हरयाली छाई बढ़न पड़ी दिन रैना ।।
होन लगी रखवाली झपटे कहुं तोता कहुं मैंना ।।
झूल रहे शेखर की डाली कौन जो डाह करै ना।।
ना जाने मोहि ठण्डक नाहीं जबलों जेठ जरै ना।।
ना मानूं तन हो यह पीली जबलों धूल भरै ना।।
टूट जायं तहियां छिलके की रस झर फूट झरै ना ।।
ना मिठास पूरा है जबलों कोऊ हाथ धरै ना ।।
कैसे करूँ जबलों उन अधरन तन यह लाग तरै ना ।।

## आह !
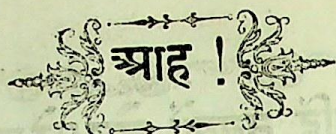
जलते जलते भी घर चन्दन, सौरभ से कर देता पूर,
सुई चुभाओ, दांत से चूसो, रस ही बरसेगा अंगूर।
चोट हथौड़े की भी खाकर टूट जाय बीणा की तार ॥
मीठी ही झनकार करेगी अधिक वेग से अन्तिम वार,
सच्चा प्रेमी झरता आंसू, भरा हृदयमें प्रेम अथाह।
चोटों से नहीं चाह मिटेगी, मीठी ही निकलेगी आह ॥

## वसन्त

आ गई तोरी वसन्त,

( १ )

मेल शीत उष्ण तार गगन छोड़ दी सितार।
मोका ना भावैं सिंगार, तेरो वे मिलन्त ॥ आगई तोरी वसन्त

( २ )

तेरी सेन खेलै फाग बेला भैरों को बिहाग।
खोई आपनो सुहाग, लाड़लिया बिलपन्त ॥ आगई तोरी०

( ३ )

लोहू के कलश आन, नैन नीर धार सान।
खेलूं फाग हुक्म मान, तेरो ऐ ! अनन्त ॥ आगई तोरी०
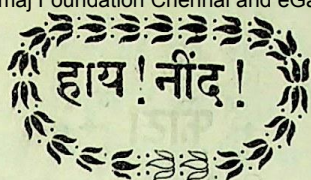
*मोरि नींद न हरि को भाई रे--टेक।*

१

पहिले आ नटवर कान्हा ने बंसी तान सुनाई रे,
हम चादर आंचल सों बोले, लोरी भली बनाई रे ॥ १ ॥

२

कपिल वस्तु के भिख मंगवाने दूजी तान उड़ाई रे,
सुधि हमरी लें भोरे बाबा सुधि हमरी बिसराई रे ॥२॥

३

फिर बालक भंगवे धारी ने अपनी राह बताई रे,
सो अपनी सुधि लेवत सोगये दूजी खाट बिछाई रे ॥३॥

४

बड़ो लड़ैय्या दखिनी जोगी, करारी मार लगाई रे,
हम चुटकी झोली में दीन्हीं, परली राह बताई रे ॥४॥

५

जोगी सो पर जादूवाला, रक्तबीज को भाई रे,
खटमल बन इत उत मोहि काटत बाकी सैन पठाई रे ॥५॥

६

करन गुदगुदी फिर प्रभु भेजे, डायर ड्वायर भाई रे,
पेट पकर हंस हंस बस कीन्ही, अब प्रभु देत दुहाई रे ॥ ६ ॥

दिल तो पहिले भेज चुके हैं लो अब हम भी आते हैं,
पहिले आंख पर चढ़ कर आये अब कागज़ पर आते हैं।।
पथदर्शक अब हवा का झोंका जहां कहीं ले जायेगा,
आंख मीच के सुख या दुख में बन्दा वहीं पै जायेगा।।
इस कागज़ में रहकर भी जो तुमरे दर्शन पाऊँगा,
वहीं किसी कोने में धीमे राग तुम्हारे गाऊँगा।।
नर नारी के जीवनदाता अब तुम जब बन जाओगे,
जिसको सब आशा से देखे वह प्रासाद बनाओगे।।
जड़ चेतन सब ही रतनों से उसको खूब सजाओगे,
हो उदार इस कागज़ को भी निश्चय कहीं लगाओगे।।
तब लीला से पांव परस्ते वहां एक दिन आओगे,
"यहां कौन यह" कोमल यूँ एक मीठी धुनि सुन पाओगे।।
है कोई आफ़त का मारा तब यों बात सुनाओगे,
पर उस कोमल बाहुपाश से छूट नहीं तुम पाओगे।।
आखिर क्यों आया यों कहकर मनही मन पछताओगे,
टूटी फूटी कटी छँटाई कुछ तो कथा सुनाओगे।।
तब स्वभाव कोमल यह वत्सल दिल पानी हो जावेगा,
ओह उदारता और अनुकम्पा तब भी झड़ी लगायेगा।।
वह कागज़ का टुकड़ा भी तब चेतन ही हो जायेगा,
एक आँख में एक पल भर में क्या कुछ बीत न जायेगा।।
नाच उठेंगे रोम हृदयमें कैसे भला समाऊँगा,
कागज़ में लटका लटका भी दो आँसू टपकाऊँगा।।

कहीं एक दिन हाथ जेब में तुमरी डालें खींचे कोट,
नन्हें नन्हें हाथ लगाकर पीठ तुम्हारी मीठी ओट ॥
खींच २ कर फ़ूल तुम्हारे उसी कोठरी लावेंगे,
कौन कौन की वही निकम्मी फिर से झड़ी लगावेंगे ॥
तब मीठे भोजन और फल दे तुम उनको बहलाओगे,
धन्यवाद तब मेरे दिल से स्नेह सने तुम पाओगे ॥
साधन बन फल दिलवाने का मैं भी सुयश कमाऊँगा,
कागज़ में बैठा बैठा भी हंस कर गाल फुलाऊँगा ॥

---
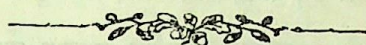
यह कविता अपने एक मित्र को अपनी फ़ोटो भेजते समय बनाई गई है

# बांह की चाह

*जग में जब जन्म लिया है, सखे ! परकारण भी कुछ कर जाना । टेक ।*

पर दुःख दुखी बन आय जुरें, निशि वासर नेनन नीर झरे ।
बिगड़ी किस विध अपनी सुधरे, यह सोच उपाय करे नाना ।।१।।
कहीं ढो ढो माटी आन रहे, कहीं खून पसीने में सान रहे ।
कहीं रखवारे किरपान गहे, नित साज रहे रण का बाना ।।२।।
जिस की समरथ हो सोस धरे, कोई अञ्जलि जल ही आन भरे ।
रचना इक उन्नत मन्दिर है, इक ईंट हो इसमें लगा जाना ।।३।।
दुख में तड़पें 'सुख में भटके', मद झूम के झाड़ी में अटके ।
अकुलाय नैन डरी पलकें, इन मारग ही दिखला जाना ।।४।।
अब मार कड़ा कुछ रूप धरे, तन घाव अनेक लगे हैं परे ।
बिन मीत के नैन इन्हें को भरे? थकती बांह थामा जाना ।।५।।

# फिरङ्गिया !

*फिरंगिया ना ये हंसी की बेला ।।टेक।।*

राज पाट सरवस्व ये तेरा, मैं लातों से ठेला ।।
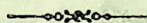
मोहि घड़ियां सो बिसुरत नाहीं, रंग डायर ने खेला ।
थूक पड़ा मुख मोरी माता के, क्या क्या और न झेला ।। १ ।।
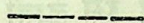
भेड़िया नाहीं खून पियासा, ना बकरी का लेला ।
आदि गुरू मेरे दयानन्द हैं, फिर गांधी का चेला ।। २ ।।

किरच कटारी तोप तमञ्चा, कुछ ऊपर भी झमेला ।
चक्र सुदर्शन चरखा मोरा, तुझे लश्कर, मैं अकेला ।।३।।
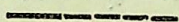
लोह फांस सिगरे तू काटे, काटे खांड़ा सेला ।
इस चरखे की कटे न उलझन, यह चरखा अलबेला ।। ४ ।।
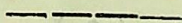
काल कोठरी के दिन जागे, लगा सन्तन का मेला ।
काहे डरावे अये मतवाले, पीकर प्याला उजेला ।। ५ ।।
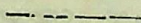
# सजले फिरङ्गिया सब हथियार

---

*सजले फिरंगिया ! सब हथियार । टेक ।*

( १ )

मौत बनी दुलहिन, सज बैठे कर सब बीर सिंगार ।
बिन डोला लीने न मुड़ेंगे गांधी के गढ़ मार ॥

( २ )

अभिमानी को मोरी आय छुरियां किरच कटार ।
मोको डर कहूं टूट न जावै इस छाती पर धार ॥

( ३ )

बार बार बलि जाऊं ऐसी गोली मार संवार ।
एक बाल कतहूं ना चूकै, सीधी होजा पपार ॥

( ४ )

जब मशीन सों बरसें गोली घिरै घोर अन्धियार ।
मैं जानूं करती 'पुर-वाला' फूलन की बौछार ॥

( ५ )

चरखी चढ़ तोपैं जो गरजी उमड़ी जै जै कार ।
डरे भीरू मैं जानूं छोड़ैं अतिश बाज़ अनार ॥

( ६ )

फिर स्वराज कब पावैं पूछैं घबराये जन चार ।
दुलहिन संग दहज नहिं आवै ना रूठी ससुरार ॥

जगन्नाथ प्रेस राजघाट काशी।